

ISSN 2349-1906

साहित्य

वर्ष 7 अंक 28 अक्टूबर-दिसम्बर 2021

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी





बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के हिन्दी विभाग तथा दिनकर स्मृति मंच, मुजफ्फरपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'दिनकर का संस्कृति विमर्श' में व्याख्यान देते हुए साहित्य यात्रा के संपादक डॉ कलानाथ मिश्र साथ में डॉ शैलेंद्र कुमार चौधरी, डॉ शिव नारायण, डॉ पूनम सिंह, डॉ राजीव कुमार झा आदि।



प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ ममता कालिया के साथ साहित्य यात्रा के संपादक डॉ कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता : 1100/-
 एक वर्ष (4 अंक) : 500/- (डाक खर्च सहित)
 तीन वर्ष (12 अंक) : 1200/- (डाक खर्च सहित)
 संस्थागत मूल्य (3 वर्ष) : 1100/-
 आजीवन सदस्यता : 11000/-
 विदेश के लिए (3 अंक) : 60 डॉलर
 (पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)
 उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेफरेन्स नं०) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन न० :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय:	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम: रु०..... द्वारा.....
 डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :.....
 डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या :..... दिनांक :.....

दिनांक:	हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)
---------	----------------------------------

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
 एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com

यहाँ से काटिए

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-7

अंक-28

अक्टूबर-दिसम्बर, 2021

परामर्शी

डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ० प्रेम जनमेजय

डॉ० हरीश नवल

डॉ० संजीव मिश्र

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

उप-संपादक

प्रो० (डॉ०) प्रतिभा सहाय

डॉ० सत्यप्रिय पाण्डेय

सहायक संपादक

डॉ० रवीन्द्र पाठक

डॉ० करुणा पीटर 'कमल'

अमित कुमार मिश्र

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पूर्व अनुमोदित

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,
अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713

ई-मेल : sahityayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साईट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹ 75

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैग्जीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैग्जीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजे।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ॰ कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’
ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स, पटना
से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो॰ कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
आलेख	
नचिकेता : मुक्ति-संघर्ष की ऊर्जा	15
डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	
आम्रपालि : नगरवधू अथवा जनपद कल्याणी	21
शरद पगारे	
हाफलाइनर	27
डॉ. हरीश नवल	
अनुदित कविता	
डोवर का सिंधु तट	30
प्रो. नरेन्द्र कुमार	
गीत	
डॉ. अमर कान्त कुमार	32
संस्मरण	
अरे! आपनी तो खूबी भालो बोल्लेन : प्रणव मुखर्जी	33
डॉ. पारस कुंज	
आलेख	
मानवीय सरोकार से जुड़ा कहानीकार : रमेश पोखरियाल 'निशंक'	37
डॉ. संजय चौहान	
धर्मवीर भारती के यात्रा साहित्य में युद्ध और युद्धोत्तर सामाजिक समस्याएँ	45
डॉ. अनीश के. एन.	
पुस्तक समीक्षा	
मेरा कमरा : साहित्यिक डायरी में निबद्ध आज का समय	50
डॉ. वेद मित्र शुक्ल	
आलेख	
उपनिवेश में स्त्री-शिक्षा व समाज सुधार	54
डॉ. उर्मिला शर्मा	

भक्तिकालीन हिन्दी काव्यों में वसंत का स्वरूप राजेन्द्र सिंह	60
कहानी	
मौली प्रियंका पाठक	74
आलेख	
पर्यावरण रक्षक राजर्षि शाहू महाराज और वर्तमान वास्तव वाढेकर रामेश्वर महादेव	78
मुक्तिबोध-एक जनवादी कवि की आलोचना दृष्टि दीपक कुमार	83
भोजपुरी लोकगीतों में फेमिनिज्म शाम्भवी	87
आजादी का अमृत महोत्सव और हिंद स्वराज डॉ. जया आनंद	92
निबंध	
निज भाषा उन्नति सुधांशु पांडे “निराला”	96
पुस्तक समीक्षा	
साहित्य और समाज : विविध समय संदर्भ डॉ. सविता मिश्र	99
आलेख	
साहित्य और सिनेमा में ग़ज़लों का दृष्टिकोण तेजस पूनियां	104
कविता	
जिन्दगी को उधार और देश की सरकार अमित कुमार मिश्रा	110-111
साहित्यिक गतिविधि	
किरणोत्सव	112

सम्पादकीय

दिनकर का सांस्कृतिक विमर्श

विगत दिनों 24-25 अक्टूबर को बाबा साहब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के हिन्दी विभाग में 'दिनकर की साहित्य साधना' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। वृहद रूप में आयोजित इस संगोष्ठी में अनेक विद्वानों को सुनने एवं अपने वक्तव्य के दौरान 'दिनकर के सांस्कृतिक विमर्श' पर पुनः विचार करने का सुअवसर मिला। उन्हीं तानो-बानो को बुनते हुए साहित्य-यात्रा का यह संपादकीय लिख रहा हूँ।

दिनकर जी भारतीय संस्कृति के मूर्तिमान स्वरूप थे। ऊपर से नीचे तक अपदमस्तक भारतीय चेतना से युक्त व्यक्तित्व बिरले ही दिखते हैं। उनके लिए राष्ट्र का मतलब सिर्फ भूगोल नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्रीय चेतना, समाज, धर्म, दर्शन, संस्कृति, मूल्य, परम्परा, इतिहास, राजनीति, सभी उनकी सांस्कृतिक अवधारणा में समाहित है। उनकी सांस्कृतिक चेतना को समझने के लिए 1976 में बरेली कॉलेज के 13 वें दीक्षांत समारोह में दिनकर जी ने जो भाषण दिया था उसका कुछ अंश यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि —

‘पश्चिम के समस्त देशों में आधुनिकता अपने संघर्ष में जीती है और प्राचीनता पराजित हुई है भारत में यह संघर्ष चल रहा है भारत में नवीनता को प्राप्त कर बदलता रहा है पर इसकी विशिष्टता यह है कि यह जितना ही बदलता है अपने आत्मस्वरूप के अधिक निकट पहुँचता है यही विलक्षणता भारत का अपना गुण है और इसी गुण के कारण भारत के लोग यह आशा लगाए बैठे हैं आधुनिकता को अपना लेने के बाद भी भारत भारत रहेगा और संसार के सामने एक नया नमूना पेश करेगा’।

स्पष्ट है कि दिनकर जी अपने देश के पुरातन मूल्यों को भी संजोना चाहते हैं जिससे इस मानवता का विकास हुआ है लेकिन दूसरी ओर अंधविश्वास को भी त्यागने की बात करते हैं। ऐसे अंधविश्वास जो मानवता के विकास में बाधक हैं तथा जो भारत की मूल प्रकृति के अनुकूल नहीं है। भारत के सांस्कृतिक रूप का सुंदर उदाहरण हमें उनकी रचना ‘नील कुसुम’ में मिलती है, ‘किसको नमन करूँ मैं’ कविता में इन पंक्तियों को देखें —